

अध्याय पंचम
शोध सारांश : निष्कर्ष : सुझाव



अध्याय पंचम

शोध सारांश : निष्कर्ष : सुझाव

5. प्रस्तावना :

स्वाधीनता के बाद देश में विद्यालयों की संख्या विद्यार्थियों का नामांकन तथा धारण की में पर्याप्त सुधार हुआ है किन्तु विद्यार्थियों की उपलब्धि में आपेक्षित सुधार नहीं हुआ है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में विद्यालयीन शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर की संकल्पना प्रस्तावित की गई है । प्राथमिक स्तर पर सामान्यतः मात्र भाषा प्रारंभिक गणित तथा पर्यावरण अध्ययन विषयों का अध्ययन अध्यापन किया जाता है ।

पूर्व अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि विद्यार्थियों की गणित विषय में उपलब्धि अन्य विषयों की तुलना में कम है । साथ ही गणित के विभिन्न क्षेत्रों में से दशमलव पर आधारित प्रश्नों को हल करने में विद्यार्थियों को सर्वाधिक कठिनाई होती है । जबकि दशमलव का हमारे दैनिक जीवन में अत्याधिक महत्व है । यदि विद्यार्थियों को प्राथमिक कक्षाओं में दशमलव का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाये तो यह उनको भावी जीवन में माप, तौल मुद्रा आदि को समझने में उपयोगी होगा अतः शोधकर्ता ने अपने अध्ययन हेतु निम्न समस्या का चयन किया ।

5.1 समस्या कथन :

“कक्षा पांच के विद्यार्थियों में दशमलव उपलब्धि स्तर एवं शिक्षण प्रभाव का अध्ययन ।”

5.2 स्वतंत्र चर - कक्षा
लिंग

आश्रित चर - दशमलव मूल संक्रियाओं से संबंधी उपलब्धि ।



5.3 शोध के उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों में दशमलव भिन्न से संबंधित जोड़, घटाना, गुणा, भाग का उपलब्धि स्तर अध्ययन ।
2. दशमलव शिक्षण हेतु शिक्षण सामग्री तैयार करना ।

3. छात्रों में पूर्व और पश्च परीक्षण में दशमलव शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन ।
4. छात्राओं में पूर्व और पश्च परीक्षण में दशमलव शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन ।
5. कक्षा 5 के विद्यार्थियों में दशमलव संबंधी निवेश का अध्ययन ।

5.4 परिकल्पनाएं :

1. शिक्षण के पश्चात् दशमलव पर आधारित संक्रिया (भिन्न, जोड़, घटाना, गुणा, भाग) करने संबंधी उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर आता है ।
2. छात्र एवं छात्राओं में शिक्षण के पश्चात् दशमलव आधारित संक्रिया (भिन्न, जोड़, घटाना, गुणा, भाग) करने संबंधी उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर आता है ।
3. छात्रों में शिक्षण के पश्चात् दशमलव आधारित संक्रिया (भिन्न, जोड़, घटाना, गुणा, भाग) करने संबंधी उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर आता है ।
4. छात्राओं में शिक्षण के पश्चात् दशमलव आधारित संक्रिया (भिन्न, जोड़, घटाना, गुणा, भाग) करने संबंधी उपलब्धि में सार्थक अन्तर आता है ।

5.5 प्रतिदर्श :

लघु शोध कार्य में प्रतिदर्श को लिए म.प्र. के एक शहरी क्षेत्र होशंगाबाद जिले की तहसील इटारसी के दो शासकीय प्राथमिक शालाओं के कक्षा 5 के विद्यार्थियों के उद्देश्यी प्रतिदर्श के आधार पर चुना गया ।

5.6 उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया—
दशमलव अंकगणित परीक्षण

5.7 प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता ने निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. सहसम्बन्ध आर.
4. "टी"—मूल्य



5.8 निष्कर्ष :

1. कक्षा पांच के विद्यार्थियों में गणित शिक्षण के पश्चात् छैः प्रकार की संक्रिया पर आधारित प्रश्नों को हल करने में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. छात्र एवं छात्राओं में शिक्षण के पश्चात् छैः प्रकार की संक्रिया पर आधारित प्रश्नों को हल करने में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. छात्रों में शिक्षण के पश्चात् पांच संक्रियाओं पर आधारित प्रश्नों को हल करने पर सार्थक अन्तर पाया गया।
4. छात्रों में शिक्षण के पश्चात् योग संक्रिया पर आधारित प्रश्नों को हल करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
5. छात्राओं में शिक्षण के पश्चात् पांच संक्रियाओं पर आधारित प्रश्नों को हल करने में सार्थक अन्तर पाया गया।
6. छात्राओं में शिक्षण के पश्चात् योग संक्रियाओं पर आधारित प्रश्नों को हल करने में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
7. कक्षा पांच के विद्यार्थियों में पूर्व परीक्षण के दौरान चार विद्यार्थियों ने न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त किया पश्च परीक्षण के दौरान चार विद्यार्थियों ने न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त नहीं कर सके।

शिक्षण के पश्चात् केवल चार विद्यार्थी ऐसे है जो न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर सके इसलिए इन विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण कराना आवश्यक है।

5.9 सुझाव :

1. शिक्षकों को गणित विषय पढ़ाते समय पाठ्य पुस्तकों के विषय वस्तु पर नहीं बल्कि दशमलव पर आधारित गणित का दैनिक जीवन से जोड़कर पढ़ाना होगा।
2. प्राथमिक शालाओं में गणित संबंधी आधुनिक सुविधायें गुटके, नक्शा, चार्ट, ओ. बी. किट उपलब्ध करायी जाये।
3. विद्यार्थियों को कक्षा में दशमलव पर आधारित प्रश्नों का अधिक से अधिक अभ्यास कराना होगा।



4. प्राथमिक शिक्षकों का समय-समय पर रिफ्रेशर कोर्स होना चाहिए ।
5. गणित में दशमलव आधारित सवालों (मुद्रा, भार, लंबाई, धारिता) से संबंधित प्रश्नों दैनिक जीवन से जोड़ते हुए प्रत्यक्ष कराना चाहिए ।
6. भिन्नों, दशमलव, प्रतिशत से संबंधित सवालों को गुटकों, चार्ट, एबाकस के माध्यम से पढ़ाना चाहिए ।
7. हमें दक्षता आधारित शिक्षण पर बल देना होगा ।
8. प्राथमिक शालाओं में गणित क्लब की स्थापना होना चाहिए जिसमें गणित क्विज होना चाहिए ।
9. प्रा. शिक्षकों को क्रियात्मक अनुसंधान का प्रशिक्षण आवश्यक रूप से दिया जाना चाहिए जिसमें वे अपनी समस्याओं को हल करने में समर्थ हो सकें ।
10. विद्यार्थियों को इकाई परिवर्तन का ज्ञान करना चाहिए ।

5.10 भावी शोध हेतु सुझाव :

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं की गणित विषय में होने वाली अधिगम कठिनाइयों का निदानात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है ।
2. बड़ा प्रतिदर्श लेकर इसी कार्य का उच्च स्तर पर भी कार्य पा सकता है ।
3. दशमलव पर आधारित गणित के आधारभूत कोशलों (जोड़, घटाना, गुणा, भाग) में होने वाली अधिगम कठिनाइयों के लिए एक निदानात्मक परीक्षण तैयार किया जा सकता है ।
4. ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक पाठशालाओं में इसी कार्य को किया जा सकता है ।
5. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की प्राथमिक पाठशालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का दशमलव आधारित संक्रियाओं पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

